International Journal of Engineering, Management, Humanities and Social Sciences Paradigms (IJEMHS)
Volume 35, Issue 02 and Publication Date: 22nd April, 2023
An Indexed, Referred and Peer Reviewed Journal
ISSN (Online): 2347-601X
www.ijemhs.com

बिहार में महिलाओं की गौरमयी राजनीतिक विरासत का वर्तमान राजनीतिक सशक्तिकरण पर प्रभाव

स्वीटी प्रिया[1] और डॉ0 रीता सिंह[2]

[1]शोध छात्रा, गृह विज्ञान विभाग, बी.एन.एम.यू. मधेपुरा ,बिहार

[2]पूर्व विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान विभाग, बी.एन.एम.यू. मधेपुरा ,बिहार

सार

यह सर्वविदित है कि आदिकाल से ही स्त्रियों और पुरुषों ने मिलकर कार्य किया है। महिलाओं ने अपने महत्व को महसूस करना शुरू किया, विशेष रूप से भारत में, जब प्रगतिशील विचारधारा ने सामाजिक पुनर्जागरण को पकड़ना शुरू किया। सुभद्रा कुमारी चौहान, जो झाँसी की रानी थीं और एक पुरुष के रूप में बहादुरी से लड़ीं, ने अपने साहित्य के माध्यम से महिलाओं को सिखाया कि वे वीरता और वीरता में पुरुषों के बराबर हैं। 1885 में राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद, विशेष रूप से महिलाओं को अधिक सूचित किया गया, और वे भी धीरे–धीरे राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने लगीं।

विस्तार

महात्मा गांधी के करो या मरो के आदर्श वाक्य ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन को श्री गणेश में बदल दिया। सरकार ने रातोंरात देश के सभी प्रमुख अधिकारियों को कैद कर लिया। पूरे देश में क्रांति की लहर दौड़ गई और महिलाओं ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश वर्चस्व का क्रूर चक्र शुरू हुआ, लेकिन महिलाओं ने विचलन का कोई संकेत नहीं दिखाया। बिहार ने अपनी शान के मुताबिक आजादी के आंदोलन में हिस्सा लिया और यहां की महिलाओं ने यह दिखा दिया कि वे देश के दूसरे राज्यों की महिलाओं के बराबर हैं।

एक अन्य कारक यह है कि हम उल्लेखनीय बिहारी महिलाओं द्वारा किए गए योगदान से अनभिज्ञ हैं। लेकिन यह सच है कि आजादी की लड़ाई में बिहार की महिलाओं ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

राष्ट्रीय संग्राम में भाग लेने की महिलाओं से गाँधीजी की अपीलः–

सत्याग्रह आंदोलन आरंभ करते समय गाँधी जी ने भारत की महिलाओं के नाम एक खुली चिट्ठी में उनसे विदेशी वस्त्र एवं नशीले प्रदार्थ के बहिष्कार संबंधी कार्यो में भाग लेकर राष्ट्रीय संग्राम में सहायता देने की अपील की थी। उन्होंने महिलाओं से अपनी अपील में कहा था कि विदेशी दल का बहिष्कार हस्त निर्मित वस्त्र के उत्पादन में आनुपातिक वृद्धि करके प्रभावी बनाया जा सकता था। इस काम में स्त्रियाँ (सुत काटने में) अपना बचा हुआ समय लगाकर बहुत सहायता कर सकती थी। इन दोनों बहिष्कार कार्यो के लिये प्रचार के संदर्भ में गाँधी जी ने उससे कहा था कि विदेशी वस्त्र विक्रेताओं तथा क्रेता एवं शराब पीने वाले एवं बेचने वालों से उनकी अपील उनका ह्दय पिघलाए बिना नही रह सकती थी। अपनी अपील के अंत में गाँधी जी ने कहा कि यह असंभव नही कि इस सिलसिले में उन्हें अपमानित किया जाय। किन्तु ऐसा अपमान सहना भी उनके लिए गौरव की बात होगी। यदि ऐसा हुआ तो इससे देश की अग्नि परीक्षा जल्दी खत्म होगी।

बिहार में, कई महिलाओं ने पर्दा तोड़ दिया और गांधीजी की अपील पर बहादुरी से प्रतिक्रिया व्यत्त की। विशेषकर पटना में बहिष्कार की सफलता का अधिकांश श्रेय महिलाओं को जाता है। श्रीमती हसन इमाम के नेतृत्व में महिलाओं के एक समूह ने पटना की सड़कों पर दुकान मालिकों से विदेशी कपड़े न बेचने की गुहार लगाई। श्रीमती विंध्यवासिनी देवी का भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान रहा। पटना सिटी मजिस्ट्रेट ने महिला पुलिस को तैनात करने की सलाह दी क्योंकि उन्हें उम्मीद थी कि महिलाएं ड्रग डीलरों के धरने में भाग लेंगी। इस सुझाव को जिलाधिकारी और आयुत्त ने उपयोगी बताते हुए खारिज कर दिया। सहसराम में कुछ अन्य महिलाओं व बार एट लॉ श्री राम बहादुर की पत्नी ने पड़ोस के थाने के सामने नमक का सेंध तैयार किया ।

बिहार की पढ़ी–लिखी महिलाओं ने संकेत दिए कि वे जाग सकती हैं। अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की एक बैठक जनवरी 1929 में पटना में हुई थी। बिहार की महिलाओं को देश के अन्य क्षेत्रों की महिलाओं के साथ बातचीत करने का मौका मिला था, और देश की आजादी के बारे में बहस हुई थी और महिलाओं में व्याप्त बुराइयों को कैसे खत्म किया जाए। समाज हुआ। सम्मेलन ने बिहार में एक शाखा की स्थापना की। समूह की बैठक 7 दिसम्बर, 1929 को हुई। सूबे में स्त्रियों की शिक्षा पर पूरा ध्यान देने पर बल दिया गया। 20 जनवरी, 1930 को बंबई में, अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की एक बैठक, जिसमें सामाजिक और

शैक्षिक परिवर्तनों का आह्वान किया गया था, में बिहार की कुछ महिला सदस्य शामिल थीं। 4 दिसम्बर, 1930 को बिहार महिला सम्मेलन का चौथा सम्मेलन गया के थियोसोफिकल हॉल में हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री नंदकिशोर लाल की पत्नी ने की। बिहार के लिए स्थायी समिति की सदस्य श्रीमती कमल कामिनी देवी ने पिछले वर्ष किए गए कार्यों पर एक रिपोर्ट पढ़ी, और आगामी अखिल भारतीय महिला सम्मेलन सत्र में भाग लेने के लिए कुछ प्रतिनिधियों को चुना गया।

बिहार की प्रमुख महिलाओं में अनुसुइया जायसवाल, श्रीमती शांति ओझा, श्रीमती लीला सिंह, श्रीमती राम स्वरूप देवी, श्रीमती राम प्यारी देवी, श्रीमती सरस्वती देवी, श्रीमती विंध्यवासिनी देवी, श्रीमती शारदा कुमारी, श्रीमती प्रियंवदा हैं , और श्रीमती सुंदरी देवी, लाल बहादुर शास्त्री की बहन और शंभुशरण वेर की पत्नी हम इन महिलाओं के योगदान को कभी नहीं भूलेंगे क्योंकि उन्होंने बिहार की महिला आबादी के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए अथक प्रयास किया। उन्होंने कई अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का काम किया, जो आजादी की लड़ाई में शामिल हुईं, जेल में समय बिताया और यहां तक कि अपनी जान भी दे दी।

19वीं शताब्दी के कई लेख और अभिलेख बताते हैं कि 1857 के प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भोजपुर के जगदीशपुर, पीरो, बीबीगंज और आरा की कई महिलाओं ने गुप्त रूप से कुवर सिंह की सेना की सहायता की थी। करमन बाई, धरमन बाई, नर्तकी गुलाबी और आरा सभी ने बाबू कुँवर सिंह की तरह–तरह से सहायता की। हालाँकि इस आंदोलन को दबा दिया गया था, लेकिन इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। शाहाबाद की एक नर्तकी गुलाबी, झनक–झनक पायल, वाद्य की रेंज और तलवार की खनखनाहट दोनों का पाठ करती थी। बिहार के जाने–माने मुत्ति योद्धा कुंवर सिंह ने उन्हें प्यार किया। बाबू कुंवर सिंह का बचाव करते हुए उन्हें एक बार गोली मार दी गई, जिससे वह शहीद हो गईं। आरा में, बाबू कुंवर सिंह ने अपने शहीद गुलाबी के सम्मान में एक मस्जिद का निर्माण किया।

सन् 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। गांधी ने 1917 में चंपारण सत्याग्रह के हिस्से के रूप में बिहार में अपनी सार्वजनिक शुरुआत की। महात्मा गांधी की मांग के परिणामस्वरूप बिहार के छात्राों के साथ–साथ कुछ अन्य छात्रों ने अपने कॉलेज के पाठ्ड्क्रम छोड़ दिए। इस आंदोलन में दिघवारा प्रखड के मलखाचक गांव के लड़के–लड़कियों ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया. गांधी। गांधीजी का विचार था कि भारत में महिलाओं को स्वराज्य की सफलता में समान रूप से

हिस्सा लेना चाहिए। कभी यह माना जाता था कि महिलाएं अपनी भावनाओं का उपयोग करके पहाड़ों को हिला सकती हैं। बापू के अनुसार, जेल में पुरुषों द्वारा छोड़े गए कार्यों को महिलाएं कुशलता से पूरा करती थीं। गांधीजी ने जोर देकर कहा कि महिलाएं अनुनय–विनय में पुरुषों से श्रेष्ठ हैं। क्योंकि वह अधिक अहिंसक होता है। उन्होंने महिलाओं से इस वजह से स्वराज को पुनः प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ने का आग्रह किया।

राजनीति में महिलाओं का आह्वान करते हुए गाँधीजी ने कहा था आजकल बहने राजनीति में कम हिस्सा लेती है। और जो लेती है उनमें से अधिकांश स्वतंत्र विचार नही रखती जैसा माता–पिता या पति कहते है, वैसा करती है और अपनी पराधीनता महसूस करके स्त्रियों के अधिकार को नजर अंदाज कर देती है। इसके बदले स्त्री कार्यकर्त्तियाँ तमाम बहनों के नाम मतदाताओं की सूची में दर्ज कर दे, उनको व्यवहारिक शिक्षा दें उन्हें स्वतंत्र रीति से विचार करना सिखाये उन्हें जात–पात की जंजीरों से छुड़ाएं और ऐसी हालत पैदा कर दे जिससे पुरूष ही उनकी शक्ति और उनके त्याग को पहचानकर उन्हें आगे बढ़ाएं।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में इसके प्रारंभ काल से ही महिलाओं का थोड़ा बहुत योगदान रहा है, किन्तु ये अनुपात में कम थी। 1889 में बिहार के स्वराज्य कुमारी देवी तथा कादम्बिनी गांगुली के साथ 10 महिलाओं ने बंबई कांग्रेस में भाग लिया था। 1890 में कादम्बिनी गांगुली प्रथम महिला थी जिसने कांग्रेस के मंच से भाषण किया था। उन दिनों प्रमुख कांग्रेसी कार्यकताओं की पत्नियाँ अपने पति के साथ जाती तो थी लेकिन उनका कोई सक्रिय योगदान राजनीति में नही होता था और न ही उनके कोई विचार ही लिए जाते थे।

बेगम रहमान और श्रीमती सैयद हसन इमाम ने 1919 में बिहार प्रतिनिधिमंडल के हिस्से के रूप में 34 वें अखिल भारतीय कांग्रेस सम्मेलन की यात्रा की। उस समय बिहार में कांग्रेस संगठन के लिए श्रीमती इमाम जैसी कई महिलाएँ काम नहीं कर रही थीं। हालाँकि, बिहारी महिलाएँ भी गांधीजी के करिश्मे की ओर आकर्षित हुईं और उनके आह्वान में भाग लेने लगीं।

1921 में सरला देवी चौधरी ने कांग्रेस संगठन के लिए अथक प्रयास किया। 1921 ई0 के नवम्बर माह में जब ब्रिटिश राजकुमार भारत आने वाले थे तो कांग्रेस ने हड़तालों से उनके स्वागत करने का निश्चय किया। फलतः 17 नवम्बर को जब राजकुमार बम्बई उतरे, तब समस्त बम्बई में हड़ताल हो गइ। सरला देवी ने घूम–

घूमकर राज कुमार के स्वागत में किये गये समारोहों के बहिष्कार करने की बाते की। 6 अक्टूबर को हजारीबाग में बिहार विद्यार्थी परिषद का 16वाँ अधिवेशन हुआ, जिसकी अध्यक्षता सरला देवी ने की।इस सभा में भी राजकुमार के स्वागत में किए गये समारोहों के बहिष्कार करने का निर्णय लिया गया। अक्टूबर को गिरिडीह और पंचमा में उन्होंने महिलाओ को कांग्रेस के कार्य में हाथ बटाने का आह्वान किया। इसी क्रम में छोटा नागपुर का भ्रमण कर उन्होंने खादी का खूब प्रचार किया। पटना में सावित्री देवी, सी0 सी0 दास की पत्नी तथा उर्मिला देवी ने महिलाओं में जागरण का मंत्रा पफूंका। इस क्रम में वे प्रचार के लिए मुंगेर गई। वहाँ कई सभाओं को संबोधित किया। फिर कांग्रेस के कार्यक्रमों को लेकर झरिया का सघन दौरा किया। पफलतः 22 दिसम्बर को जब राजकुमार पटना आये, तब शहर में हड़ताल रही। कितने वकील भी कचहरी नही गये। कांग्रेस में सावित्री देवी को इस कार्य के लिए कई महीने की कैद की सजा हुई।

भागलपुर की लीला सिंह भी कांग्रेस के संगठन के कार्य में सक्रिय रही। मुजफ्फरपुर में उन्होंने कांग्रेस के कार्यक्रमों में महिलाओं को आगे आने का आह्वान किया। वे कौमी सेवादल की भी अध्यक्ष थी। तत्पश्चात बिहार प्रान्तीय कांग्रेस का कोषाध्यक्ष भी बनी।

1921 के अखिल भारतीय कांग्रेस के छतीसवें अहमदाबाद सम्मेलन में बिहार के प्रतिनिधिमंडल में पाँच महिलाओं ने भाग लिया था, वे थीं श्रीमती लाला दौलत राम, जानकी देवी, गुलाबन देवी, हरमति देवी, महादेवी तथा लीला सिंह।

मुहम्मद अली और शौकत अली की माँ अमानी बानों बेगम ने भी पूरे बिहार का सघन दौरा किया। अली बंधुओं की गिरफतारी के समय उन्होंने महिला सभाएँ संगठित की। अंग्रेंजों की कठोरता का वे सभाओं में विरोध करती थी। अंग्रंजों को प्रार्थना पत्र देने में उन्हें विश्वास नही था। लाहौर की एक सभा में उन्होंने 1922 में कहा था– 150 वर्ष पूर्व भारतीयों ने दो बड़ी भूले की पहला कि अंग्रेजो को भारत मे पैर जमाने देना और दूसरा 1857 की क्रांति में आधे भारतीयों द्वारा अंग्रेजों का साथ देकर क्रांति को विफल बनाना। ऐसी गलती फिर न दुहरायी जाए यही सीख देनी चाहिए। रावलपिडी गुजरावाला और कसूर उनके मुख्य कार्य क्षेत्र थे। इन्दौर और भोपाल के दौरे के पश्चात मध्य भारत के अंग्रेजी एजेन्ट द्वारा इन्दौर से 31 जनवरी 1922 को भेजी गयी एक गोपनीय रिपार्ट मे अली बंधुओं की माँ को भोपाल होते हुए जाने के समय के बारे में लिखा गया था। गाँधी टोपी पहने एक खिलाफत का विल्ला लगाये पाँच –छः व्यक्तियों ने बाई अमन का स्वागत किया।

मुजफ्फरपुर में श्रीमती शफी, शारदा कुमारी देवी तथा कुछ हिंदू एवं मुस्लिम परिवार की समस्त महिलाओं ने भी आजादी की लड़ाई के कार्यक्रम में भाग लिया। श्रीमती शफी ने तो इस क्रम में सघन दौरा किया था। उन्होने विलासपुर और हायाघाट के कांग्रेंस कार्यकर्त्ताओं में जान ला दी थी। छपरा की श्रीमती कृष्ण कुमारी देवी ने भी घुम घुमकर कई स्थानों पर कॉग्रेस संगठन को मजबुत बनाने का काम किया। इसी क्रम में उन्होंने बाढ़ और बेगूसराय के कई स्थानों पर कार्य किया था। सिवान की श्रीमती सदयुगी प्रसाद प्रभावित होकर स्वयं सेविका बनी थी।

बिहार में, शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों की महिलाओं ने असहयोग अभियान में भाग लिया। हाजीपुर अनुमंडल का ग्रामीण हिस्सा 1922 के आसपास पूरे देश में सबसे आगे रहा। घाटारोन गांव की महिलाएं इस क्षेत्रा में आंदोलन में बहुत शामिल थीं। श्री किशोरी प्रसन्ना सिंह, विंदा देवी और श्रीमती रामसखी देवी की पत्नियाँ, साथ ही श्री कपिलदेव सिंह की माँ, इस उपखंड में घटरोन से संबंधित थीं। उन्होंने आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। यह अनुमंडल सत्यभा देवी, सीता देवी और श्री राम बहादुर सिंह की माँ और पत्नी का घर था। जब गांधी जेल से रिहा हुए तो उन्होंने इन महिलाओं से मुलाकात की।

असहयोग आंदोलन के दिनों में महिलाओं की भागीदारी बहुत ही कम थी। कुछ महिलाओं में माधुरी तथा उर्मिला देवी का नाम आता है। उर्मिला देवी ने तो 1922 के कॉंग्रेस अधिवेशन में महत्वपूर्ण सेवा प्रदान की थी। विध्यवासिनी देवी ने गया कांग्रेंस में स्वयंसेविका दल संगठित कर अपनी दक्षता का परिचय देते हुए नेतृत्व किया था। रामतनुक देवी स्वयंसेविका के रूप में गया कांग्रेस में कार्य करने गयी थी। 1922 में ही भागलपुर क्षेत्रा में दीप नारायण सिंह की पत्नी श्रीमती लीला सिंह अपने पति के साथ सक्रिय योगदान दे रही थी। प्रमुख कांग्रेंसी नेता महेन्द्र सिंह की पत्नी रामझरी देवी 1926 के गौहाटी अधिवेशन से 1929 के लाहौर कांग्रेस 1931 के करांची अधिवेशन तथा 1934 के बम्बई सम्मेलन में अपने पति के साथ नियमित रूप से जाती रही।

जनवरी 1929 में पटना में अखिल भारतीय सम्मेलन का एक अधिवेशन हुआ। इसमें बिहार की महिलाओं को देश के अन्य भागों की महिलाओं से मिलने का अवसर मिला। देश की स्वतंत्रता एंव महिला समाज में जो कुरीतियाँ फैली हुई थी उन्हें दूर करने के तरीकों पर विचार–विमर्श किया गया। इसका एक अधिवेशन 7 दिसम्बर 1929 को हुआ। उसमें शारदा ऐक्ट के समर्थन तथा पर्दा एवं दहेज प्रथा

के विरोध में प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। प्रस्ताव ने नारी शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया।

श्रीमती चन्द्रावती देवी ने 1929 में बेतिया में कांग्रेंस संगठन को मजबूत करने में अहम् भूमिका निभाई थी और वहाँ स्थानीय कमिटी की उपसभापति चुनी गई थी। 1929 में कांग्रेंस के कार्यक्रमों मे ंपटना में श्रीमती माधुरी देवी तथा श्रीमती पी0 पी0 वर्मा ने खुलकर भाग लिया। बिहार में कुछ महिला प्रतिनिधियों ने 20 जनवरी 1930 को बम्बई में सामाजिक एवं शैक्षणिक सुधारों हेतु अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के अधिवेशन में भाग लिया। बिहार महिला सम्मेलन का चौथा सम्मेलन गया के थियोसॉफिकल हॉल में 4 दिसम्बर 1930 को हुआ।

जब 4 मई, 1930 को महात्मा गांधी को हिरासत में लिया गया, तो उनके खिलाफ हड़तालें और विरोध प्रदर्शन हुए, और बैठकों में विदेशी वस्तुओं–विशेष रूप से ब्रिटिश वस्तुओं, अदालतों और शराब की दुकानों के बहिष्कार के प्रस्तावों को अपनाया गया। गया। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने 9 मई, 1930 को अपनी सभी सहायक समितियों को 16 मई से विदेशी कपड़ों और शराब की दुकानों पर धरना देने का आदेश दिया।

उपसंहार

विदेशी कपड़ों और शराब की दुकानों पर धरना देने में बिहार की महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान था। विंध्यवासिनी देवी, श्रीमती हसन इमाम, उनकी बेटी शमी, श्रीमती सी. सी. दास और उनकी बेटी गौरी दास ने पटना के नेताओं की महिला के रूप में सेवा की। इसके अतिरित्त उल्लेखनीय श्रीमती के कार्य हैं। नंदकिशोर लाल और कमल कामिनी प्रसाद। इन महिलाओं ने शहर भर में जुलूसों का आयोजन किया, आयातित कपड़ों के बहिष्कार का आह्वान किया, और डीलरों के घरों में जाकर उन्हें आयातित कपड़ों का व्यापार बंद करने के लिए राजी किया। साथ ही इन महिलाओं ने सफलता के साथ शराब की दुकानों पर धरना दिया। आंदोलन के दिन–ब–दिन तेज होते जाने के कारण प्रशासन को महिला पुलिस बल की बहाली करनी पड़ी। श्रीमती शर्मा ने एक नई चेतना के बारे में छात्रों से बात करने के लिए कई कॉलेजों का दौरा किया।

इस तरफ बिहार की महिलाओं की एक गौरवमयी राजनीतिक विरासत रही है जिससे वर्तमान में महिलाओं को राजनीतिक सशक्तिकरण हेतु दिशा मिल सकती है

जबकी उनकी वर्तमान राजनितिक गतिविधिया लगभग ठप्प सी पड़ गयी है, और जो थोड़ी बहुत है भी वो सुविधा भोगी राजनीति की चपेट में आ चुकी है।

–: संदर्भ :–

डॉ0 शशि कला सिंह	:	महिला सशक्तिकरण
अहमद, क्यामुद्दीन	:	वील्डर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया
अल्टेकर, ए0 एस0	:	दी पोजिसन ऑफ वीमेन इन इंडियन सीवीलाइजेशन
आग्नेय, विजय	:	वीमेन इन इंडियन पॉलिटिक्स
उमानाथ	:	लोक सेवक, श्री महेन्द्र सिंह
उषा गोपाल	:	कमला देवी चट्टोपाध्याय, प्रकाशन विभाग, नयी दिल्ली
कुमारप्पा, भारत	:	स्त्रियाँ और उनकी समस्याएँ
कुमार, नागेन्द्र	:	इंडियन नेशलन मूवमेन्ट
कौशिक, पी0 डी0	:	द कांग्रेस आइडियोलॉजी एण्ड प्रोग्राम
कौर, मनमोहन	:	रोल ऑफ वीमन इन फ्रीडम मूवमेन्ट